15-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

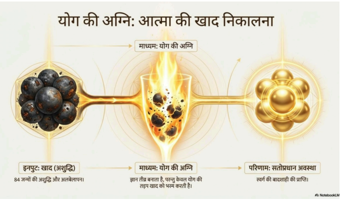


**"मीठे बच्चे - योगबल से ही आत्मा की कट निकलेगी, इसलिए योग में कभी भी ग़फलत नहीं करो"**

**प्रश्नः- बाप ने बच्चों को बेहद का वर्सा लेने की कौन सी युक्ति बताई जिसमें माया चारों तरफ विघ्न डालती है?**

**उत्तरः-** बाबा ने युक्ति बताई बच्चे तुम ब्रह्माकुमार कुमारियां एक बाप के बच्चे आपस में भाई-बहिन हो, तुम कभी क्रिमिनल एसाल्ट नहीं कर सकते। भाई बहिन विकार में नहीं जा सकते, तुम्हें शिवबाबा की मत पर चलकर बेहद का वर्सा लेना है। परन्तु माया कम नहीं है, चारों तरफ इसमें ही विघ्न डालती रहती है। "हम भाई बहिन हैं, एक बाप से वर्सा लेते हैं," यह भूल जाते हैं।

Law of Drama

**गीतः-तुम्हें पाके हमने...** Click

तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है
तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है
ज़मी तो ज़मीं आसमां पा लिया है
तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है
तुम्हें पाके हमने

मिटा न सकेगी जिसे अब फ़िज़ाँ भी
जला न सकेगी अब बिजलियाँ भी
मोहब्बत का वो आशियाँ पा लिया है
तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है
तुम्हें पाके हमने

ज़माने के ग़म प्यार में ढल गए हैं
ज़माने के ग़म प्यार में ढल गए हैं
उम्मीदों के लाखों दिए जल गए हैं
उम्मीदों के लाखों दिए जल गए हैं
के जबसे तुम्हें मेहरबाँ पा लिया है
तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है
तुम्हें पाके हमने

जहाँ से मोहब्बत की राहें मिली हैं
वहीं से मेरी गर्दिशें थम गई हैं
न बिछड़ेंगे हम कारवाँ पा लिया है
तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है
तुम्हें पाके हमने

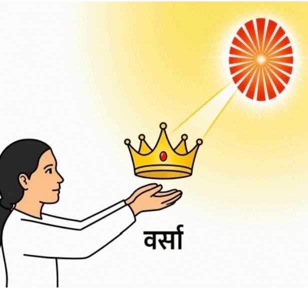

**ओम् शान्ति।** गीत का एक अक्षर ही काफी है। बच्चे जानते हैं बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है और कल्प-कल्प मिलता है। यह भी बच्चे जानते हैं कि बेहद का वर्सा बरोबर भारत को मिला था। अब वह नहीं है फिर से मिल रहा है। देखते हो - अभी तो स्वर्ग का वर्सा नहीं है, रावण द्वारा नर्क का श्राप मिल रहा है। श्राप से मनुष्य दु:खी होते हैं। वर अर्थात् वर्से से सुखी होते हैं। अब ब्राह्मण बच्चे जानते हैं वह है बेहद का निराकार बाप और प्रजापिता ब्रह्मा है बेहद का साकार बाप। बेहद के साकार बाप प्रजापिता ब्रह्मा बिगर कोई होता नहीं। भल गांधी को बापू जी कहते थे परन्तु कायदेसिर सारे मनुष्य सृष्टि का तो वह बापू जी हो न सके। सारी निराकारी वर्ल्ड का बापू जी है शिव। अभी तुम बच्चे जानते हो हम शिवबाबा के बने हैं। शिवबाबा ने आकर हमको अपना बनाया है - वर्सा देने लिए। मधुबन आते हैं किसके लिए? शिवबाबा से मिलने के लिए, परन्तु वह निराकार है। सिर्फ शिवबाबा कहने से समझेंगे नहीं इसलिए कहा जाता है बापदादा। शिवबाबा

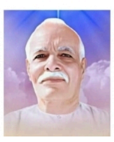

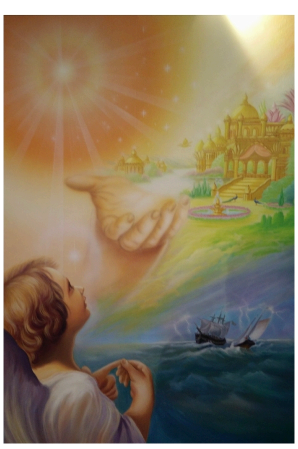

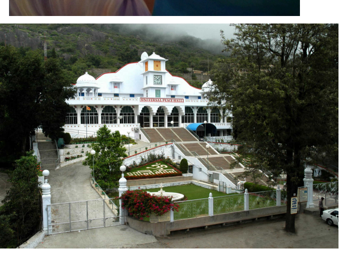

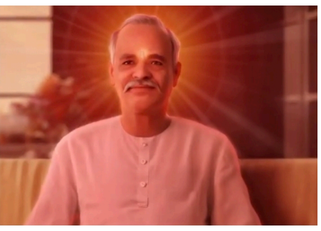

और ब्रह्मा दादा। दादे का नाम अलग है, बाप का नाम अलग है। वह निराकार सबका बाप भी है, सबका दादा भी है। सब बच्चों को बापदादा से वर्सा मिलता है जरूर। बेहद के बाप से सबको वर्सा मिलता है। वह बाप ही सबका दु:ख हर्ता सुख कर्ता है। सतयुग में कोई भी मनुष्य दु:खी हो न सके। नाम है स्वर्ग, वह है हेविन स्थापन करने वाला गॉड फादर। भारत सबसे पुराना है तो जरूर सबसे नया था तब तो अभी सबसे पुराना हुआ है। सतयुग, कलियुग भारत को ही कहा जाता है। बरोबर भारत स्वर्ग था। यह लक्ष्मी-नारायण राज्य करते थे। यह बुद्धि में है। अभी तुम लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में जायेंगे तो झट बुद्धि में आयेगा कि इन्हों को यह वर्सा कैसे मिला! यह पूज्य कैसे बनें! कब राज्य किया? किस द्वारा राज्य पाया? यह सारा बुद्धि में आयेगा। आगे लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में जाते थे, माला फेरते थे। आक्युपेशन का कुछ भी पता नहीं था। अभी सिर्फ तुम्हारी बुद्धि में है सो भी नम्बरवार। तुम अभी लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में जाकर खड़े होंगे तो हर्षित होंगे। बुद्धि में

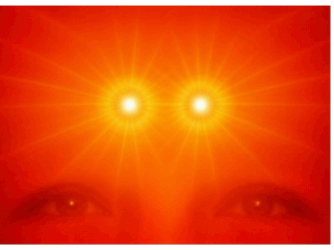

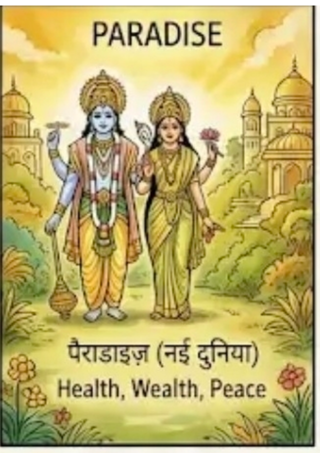

पैराडाइज़ (नई दुनिया) - पवित्रता, सुख, शांति।

*Multi Trillion dollar Question..*

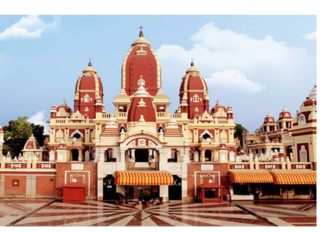

चढ़ाओ नशा...

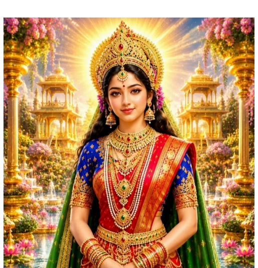

है इन्होंने यह प्रालब्ध कैसे पाई थी। संगमयुग पर ही पाई क्योंकि संगम पर ही पुरानी दुनिया बदलने वाली है। संगम पर ही बाप ने आकर राजयोग सिखाया था। यह भी जानते हो बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में बरोबर यह ब्रह्मा था। ब्रह्मा द्वारा विष्णुपुरी की स्थापना होती है। यह लक्ष्मी-नारायण ही अगले जन्म में बरोबर ब्रह्मा सरस्वती थे। ब्रह्मा के साथ ब्राह्मण ब्राह्मणियां भी होंगे। सतयुग में लक्ष्मी-नारायण की राजधानी थी ना। जरूर प्रजापिता भी होगा। तुम जानते हो हम पुरुषार्थ कर रहे हैं, जिन्होंने कल्प पहले पुरुषार्थ किया है वह हम साक्षी हो देखते हैं। एक होता है राजाई घराना, दूसरा होता है प्रजा घराना। उसमें भी कोई बहुत साहूकार होते हैं कोई कम। राजाओं में भी कोई बहुत साहूकार, कोई कम साहूकार होते हैं। तुम लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में किसको भी समझा सकते हो कि “इन्होंने यह राज्य कैसे पाया। अब फिर से वही अपना राज्य भाग्य ले रहे हैं, राजधानी स्थापन हो रही है।” कितना सहज है। अम्बा कौन है - यह भी नहीं जानते। तुम कहेंगे यह

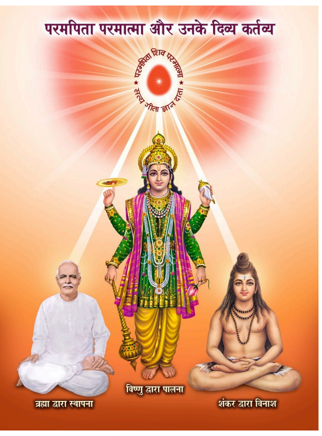

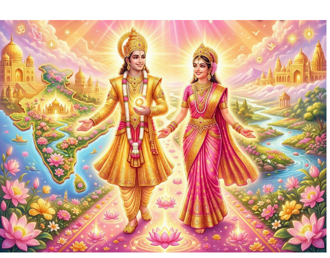

तो जगत अम्बा है। कल्प पहले भी जगत-अम्बा जगतपिता थे। उन्हों के बच्चे हम थे। संगम पर बाबा राजयोग सिखा रहे हैं। जगत अम्बा के बच्चे भी ढेर हैं। परन्तु इतने सभी को तो बिठा नहीं सकते।

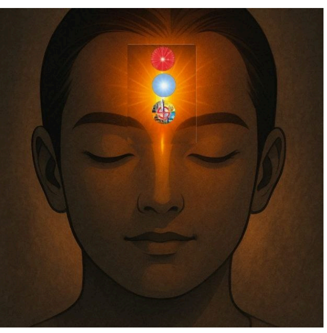

## चढ़ाओ नशा...

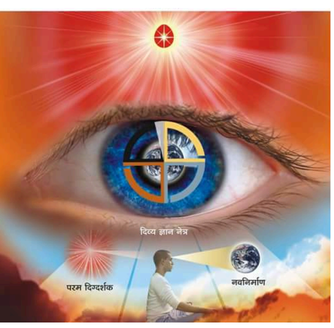

अभी तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। बाप ज्ञान का सागर है तो जरूर बच्चों को ज्ञान ही देंगे। उनको न मनुष्य, न देवता कहा जाता है। उनको परमात्मा ही कहा जाता है। तुम कोई के भी मन्दिर में जाओ तो उनकी बायोग्राफी बता सकते हो। राम के लिए भी तुम समझा सकते हो। चन्द्रवंशी घराना अभी स्थापन हो रहा है। ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मणों का भी धर्म स्थापन होता है। ब्रह्मा का नाम कितना बाला है। ब्रह्मा द्वारा बाप ब्राह्मणों को रचते हैं। तुम ब्रह्माकुमार कुमारियां होने से जानते हो हम एक बाप के बच्चे आपस में भाई-बहिन हैं। फिर हम क्रिमिनल एसाल्ट कर नहीं सकते। भाई बहिन विकार में जा नहीं सकते। बाप ने यह युक्ति रची है

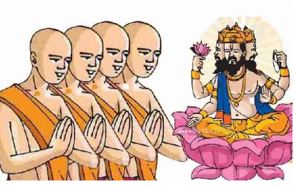

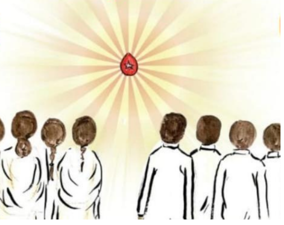

15-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

- ड्रामा अनुसार तुम भी ब्रह्माकुमार हम भी ब्रह्माकुमारी। वास्तव में Point to be Noted सारी दुनिया बी.के. है। परन्तु जानते नहीं हैं। हम शिवबाबा की मत से बेहद का वर्सा ले रहे हैं। माया भी कम नहीं है। So, Be Prepared चारों तरफ विघ्न डालती रहती है। हम भाई बहिन हैं, एक बाप से वर्सा लेते हैं, यह भूल जाते हैं। यह तो अच्छी रीति समझते हो, सतयुग में एक ही धर्म रहता है। बाकी सब धर्म खत्म हो जाने हैं। यह भी बच्चे जानते हैं, Nothing New यह कोई नई बात नहीं है। हर 5 हजार वर्ष बाद यह चक्र फिरता है। तिथि तारीख भी लिखी हुई है। यह भी बुद्धि में रहना चाहिए - हम शिवबाबा से इस युक्ति से वर्सा लेते हैं। लक्ष्य तो मिला हुआ है ना। बाप को याद कर बाप से वर्सा लेना है। याद अर्थात् योगबल से ही कट निकलेगी। इसमें कोई गफलत न हो, इसलिए मुरलियां मिलती हैं। निश्चयबुद्धि पक्का है तो भल कहाँ भी चला जाए। समझो मुरली नहीं मिलती तो भी बुद्धि में तो है ना - हम बाबा का बन गया। बाबा ने समझाया है, तुम्हारी आत्मा तमोप्रधान बनी है, अब तुम बाप को याद करो तो तमोप्रधान

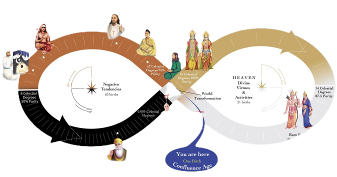

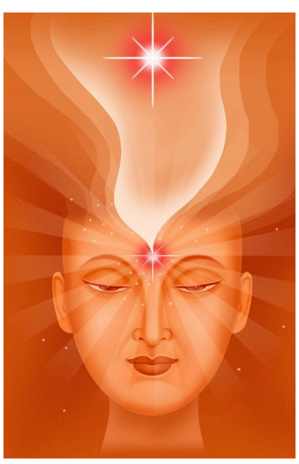

मैं जहाँ रहूँ, मैं कहीं भी हूँ
तेरी याद साथ है

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

से सतोप्रधान बनेंगे। यह महामन्त्र एक बाप ही बतलाते हैं और कोई बतला न सके। बाप ही कहते हैं मीठे-मीठे बच्चे याद के बल से ही तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यह अक्षर हैं परन्तु किसकी बुद्धि में नहीं आता। अब तुम समझते हो बरोबर कल्प पहले भी बाबा ने यह अक्षर कहा था कि देह के सब धर्मों को छोड़ अपने को आत्मा समझो। यह सब देह के धर्म हैं ना। सबका बाप एक ही है। सब आत्मायें उस एक बाप को पुकारती हैं। पोप भी गॉड को याद करते हैं। कहते हैं ओ गॉड फादर रहम करो। इन मनुष्यों की क्रोधी बुद्धियों को पलटाओ तो यह आपस में लड़ें नहीं। याद तो बाप को ही करेंगे ना। और कोई को याद नहीं करते। शिवबाबा को ही पुकारते हैं कि आकर पतितों को पावन बनाओ। पावन बनेंगे फिर तो इस छी-छी रावण की दुनिया में रह नहीं सकेंगे फिर जरूर नई दुनिया चाहिए। कलियुग से बदलकर सतयुग तो होगा ही ना। परन्तु इतना भी नहीं समझते हैं। एक डॉक्टर आया था - कहता था कलियुग तो कलियुग ही चलेगा। अरे सदैव

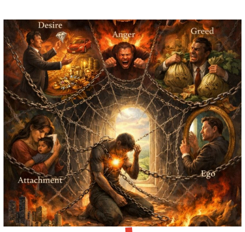

15-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

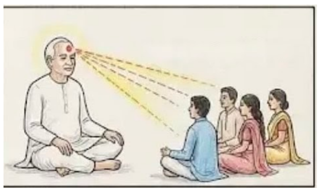

कलियुग ही कैसे चलेगा। कलियुग कोई अच्छा है क्या! समझते थोड़ेही हैं सिर्फ भावना है औरों को ले आते हैं। उनको तीर नहीं लगता और कोई आने वाले को तीर लग जाए तो भी कुछ न कुछ दलाली मिल जायेगी। स्वर्ग में तो आ जायेंगे। बाप से थोड़ा भी आकर सुनते हैं तो भी स्वर्ग में जरूर चले जायेंगे। फिर भी हेविनली गॉड फादर के सामने आकर बैठे हैं। बाप समझाते हैं - मैं सबका बाप हूँ ना। कोई मानते नहीं कि शिवबाबा कैसे आयेगा। अरे आत्मा आ सकती है तो मैं क्यों नहीं आऊंगा। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरे में जा सकती तो मैं नहीं आ सकता हूँ। नहीं तो मैं कैसे आऊं! पुकारते भी हैं हे पतित-पावन बाबा आकर पतित से पावन बनाओ। बाप कहते हैं मैं आता ही भारत में हूँ। कल्प-कल्प के संगम पर एक ही बार आता हूँ। तुम जब 84 जन्म पूरे करते हो तो मैं आता हूँ। तुम बच्चों को निश्चय है बाबा आया है फिर से वर्सा देने। बाप कहते हैं मेरा धन्धा ही है - पुरानी दुनिया को बदल नई दुनिया स्थापन करना इसलिए गाया हुआ है नई दुनिया की स्थापना, पुरानी दुनिया का

ये कोई कम बात है क्या..?

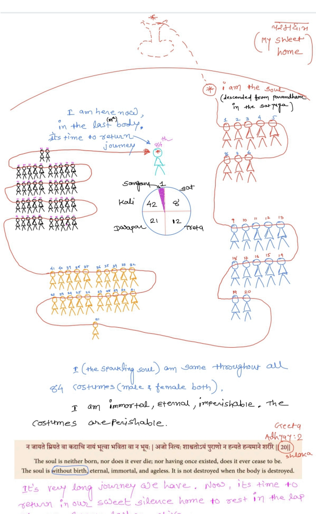

15-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

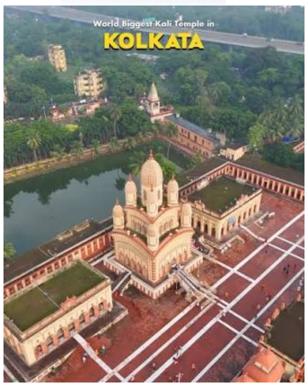


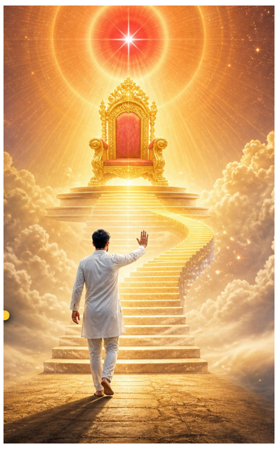

विनाश फिर तुम पालना करेंगे। रोशनी मिली है ना। काली का मन्दिर देखेंगे तो समझेंगे यह झूठा चित्र है। काली बरोबर जगदम्बा है। परन्तु ऐसे भयानक रूप नहीं है। बंगाल में काली के आगे बलि चढ़ाते हैं, परन्तु जानते कुछ नहीं। जगत अम्बा के मन्दिर में लाखों आते हैं। सदैव जैसे मेला ही है। छोटी सी मूर्ति रखी है ना। नाम रख दिया है जगत अम्बा। अब जगत अम्बा तो एक होनी चाहिए। सिन्ध में काली का मन्दिर कैसा बनाया था। एक बार किले में बम फटा तो एक फकीर ने कहा कि काली माता गुस्से हुई हैं, बस उसने जाकर वहाँ काली का मन्दिर बना दिया। अब काली है कौन! कुछ भी नहीं जानते। तुमको अब नॉलेज मिली है,

चढ़ाओ नशा...

ऐसी कोई चीज़ नहीं जिसको तुम न जानो। समझते हो बाबा से वर्सा ले रहे हैं तो पूरा पुरुषार्थ करना चाहिए ना।

ये पक्का समझ लो..

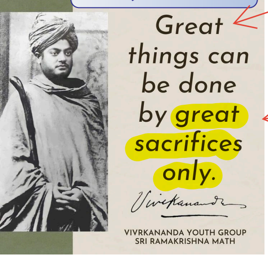


दोनों हाथों में लड्डू चाहने वाले (भौतिक दुनिया की भी लालसा हो और भगवान को भी पाना हो) वो कभी भी बाबा/भगवान को पा नहीं सकता।

Low Aim is crime.

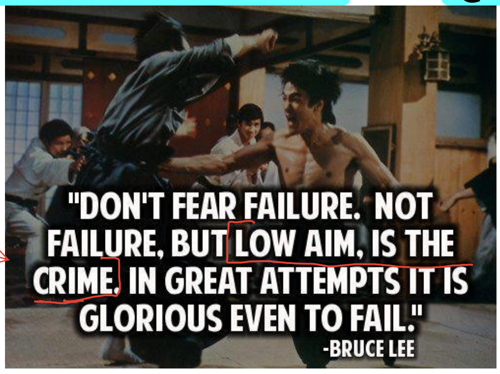


**Point to be Noted**

पहले नम्बर का दु:ख तब शुरू होता है जब कुमार

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

15-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

कुमारी शादी करते हैं। तुम्हें तो शादी करने का कभी ख्याल भी नहीं आना चाहिए। अब बाप कहते हैं यह रावण राज्य खत्म होना है। यह है विकारी गृहस्थ व्यवहार। देवी-देवताओं के लिए गाते रहते हैं। यह किसको पता नहीं कि इन देवताओं को निर्विकारी बनाने वाला कौन है! सतयुग है सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया। शास्त्रों में फिर दिखा दिया है कि वहाँ भी विकार थे। परन्तु वह तो है ही वाइसलेस वर्ल्ड, विकारी दुनिया और निर्विकारी दुनिया में कितना फर्क है। चढ़ाओ नशा... यह बातें और किसकी बुद्धि में नहीं हैं। तुम जानते हो इन लक्ष्मी-नारायण का जब राज्य था तो कितने थोड़े मनुष्य थे। एक ही धर्म था फिर वृद्धि को पाया है। चक्र भी पूरा लगाना पड़े, तब कहेंगे पूरी पृथ्वी पर चक्र लगाया। समुद्र का तो चक्र लगा न सकें। सतयुग में थोड़े हैं तो कितनी थोड़ी जमीन लेते हैं। अब मनुष्य सृष्टि की हद पूरी होनी है। ऊपर में थोड़ी आत्मायें जो हैं - वह भी आती रहती हैं। मनुष्य बढ़ते ही रहते हैं। जब वहाँ से भी आत्मायें आना पूरी हो जायेंगी, तुम कर्मातीत अवस्था को पायेंगे

मन मत

It seems like All the souls are descended From परमधाम And परमधाम is Emptied.

15-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

फिर आत्माओं को शरीर छोड़कर जाना है। उनका आना तुम्हारा जाना होगा। थोड़े-थोड़े आते रहते हैं। समझ की बात है ना। हम पहले-पहले जाकर वहाँ रहेंगे। हमारे होते कोई रहना नहीं चाहिए। यह विस्तार की बातें हैं। बच्चों को फिर भी बाप कहते हैं - अच्छा अपने प्यारे बाबुल को याद करो। तुमको फायदा है बाप को याद करने में। यह हिस्ट्री-जॉग्राफी तो मनुष्य बहुत पढ़ते हैं। बहुत दूर-दूर जाते हैं। मून में भी जाते हैं। यह है साइन्स का घमन्ड। अति में जाते हैं। मून में कुछ खड़ा थोड़ेही है। तुम तो सूर्य चांद से भी पार हो जाते हो। यह नॉलेज तुम्हारी बुद्धि में अभी है। समझते हो ड्रामा प्लैन अनुसार बाबा यह सब बतलाते हैं। बाप ही कहते हैं मैं तुमको पतित से पावन बनाता हूँ। यह मेरा पार्ट है। भक्ति मार्ग में भी यह हमारा पार्ट है।

Point to be Noted

है तो ड्रामा ना। जैसे तुम पार्टधारी हो, मैं भी पार्टधारी हूँ। मेरा काम है तुमको पतित से पावन बनाना। जो कुछ करते हैं तो उनकी महिमा होती है ना। इन लक्ष्मी-नारायण की कितनी महिमा है। परन्तु उन्हों को ऐसा लायक किसने बनाया। यह

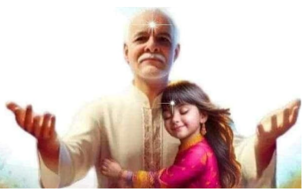

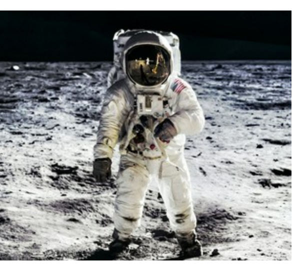

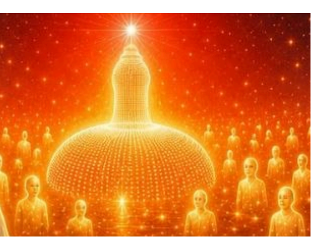

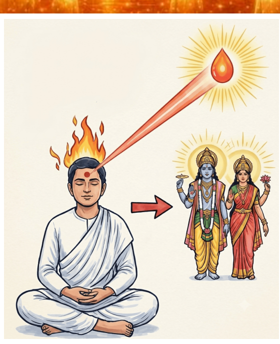

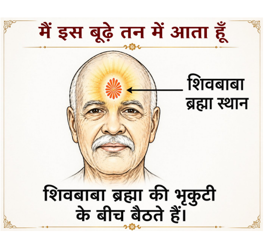

Multi Trillion dollar Question..

ज्ञान में आने से पहले हमें यह प्रश्न मन में कई बार उत्पन्न होता था कि इन्होंने(श्री कृष्णने)ऐसे क्या कर्म किए जो यह देवता बने परंतु जवाब तो कौन देगा? फिर अपने आप ही मन ही मन यह सोचते थे कि तू भी पागल है, वह तो भगवान है। और, तुझे कोई काम धंधा नहीं है जो तू फालतू कुछ भी मन में सोचता रहता है। लेकिन फिर मीठे बाबा मिले तो सब पता चल गया कि वो कैसे देवता बने? और साथ में ये भी पता चला कि यह सारी सृष्टि पुरुषार्थ के आधार पर ही चलती है कुछ भी ऐसे ही नहीं मिलता।

सुखधाम के मालिक थे। अभी तो अनेक प्रकार के कितने दु:ख हैं। आज कोई मरा, झगड़ा हुआ, भल किसके पास लाख करोड़ पदम हैं, परन्तु अगर कोई बीमारी आदि आ जाती है तो क्या करेंगे! बिरला के पास कितने पैसे हैं! एक जन्म में पैसा देखने में आता है, परन्तु ऐसा कोई नहीं है जिसको कोई दु:ख नहीं हो। किसी न किसी प्रकार का दु:ख सभी को होता है। अभी तो यह पैसे आदि सब मिट्टी में मिल जाने हैं। अच्छा!

आंखें जो देखती है वह सब है मिटने वाले
चलना है निज वतन जहां के प्रभु है रहने वाले
अपनी नजर टिकाइए उस परमधाम पर
पल भर निकालिए प्रभु के भी नाम पर

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

## धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) कर्मातीत अवस्था को प्राप्त कर वापस घर जाना है परन्तु जायेंगे तब जब आत्माओं का आना बन्द होगा, इस विस्तार को बुद्धि में रख एक बाबुल को प्यार से याद करना है।

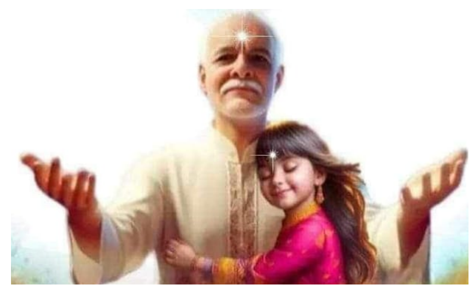

2) ज्ञान की रोशनी मिली है इसलिए निश्चयबुद्धि बन बाप से पूरा वर्सा लेना है। कहाँ भी रहते याद के बल से आत्मा को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने का पुरुषार्थ करना है।

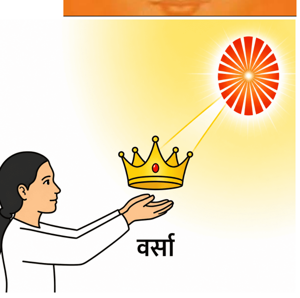

*m.m.m....imp.*

तन को जोगी सब करें,
मन को बिरला कोई.
सब सिद्धि सहजे पाइए,
जे मन जोगी होइ.
अर्थ : SmitCreation.com
शरीर में भगवे वस्त्र धारण करना सरल है, पर मन को योगी बनाना बिरले ही व्यक्तियों का काम है. यदि मन योगी हो जाए तो सारी सिद्धियाँ सहज ही प्राप्त हो जाती हैं.

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Method/Process/Instrument

15-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

Automatic

**वरदान:- स्वमान में स्थित रह विश्व द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाले, देह-अभिमान मुक्त भव**

Finale Achievement

Outcome/Output/Result

From देह अभिमानी → To देही अभिमानी

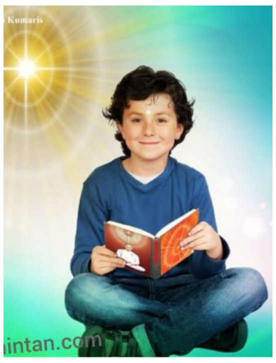

पढ़ाई का मूल लक्ष्य है - देह-अभिमान से न्यारे हो देही-अभिमानी बनना।

Note it down

इस देह-अभिमान से न्यारे अथवा मुक्त होने की विधि ही है - सदा स्वमान में स्थित रहना।

संगमयुग के और भविष्य के जो अनेक प्रकार के स्वमान हैं उनमें किसी एक भी स्वमान में स्थित रहने से देह-अभिमान मिटता जायेगा।

Automatic

जो स्वमान में स्थित रहता है उन्हें स्वत: मान प्राप्त होता है। सदा स्वमान में रहने वाले ही (only) विश्व महाराजन बनते हैं और विश्व उन्हें सम्मान देती है।

**स्लोगन:- जैसा समय वैसा अपने को मोल्ड कर लेना - यही है रीयल गोल्ड बनना।**

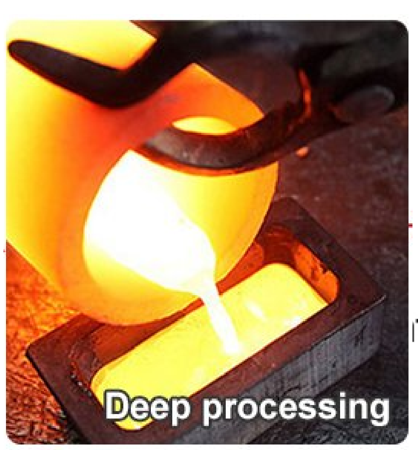

ts गा सेवा M.imp.

15-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

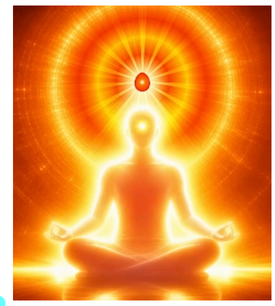

## ये अव्यक्त इशारे -

## ज्वालास्वरूप स्थिति में रह शक्तिशाली याद का अनुभव करो

अभी निर्भय ज्वालामुखी बन प्रकृति और आत्माओं के अन्दर जो तमोगुण है उसे भस्म करो।

तपस्या अर्थात् ज्वाला स्वरूप याद, इस याद द्वारा ही माया वा प्रकृति का विकराल रूप शीतल हो जायेगा।

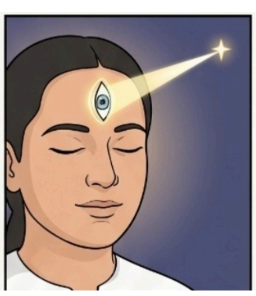

आपका तीसरा नेत्र, ज्वालामुखी नेत्र माया को शक्तिहीन कर देगा।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans जून 26 Click

All अव्यक्त इशारे जून 26 Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

# अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

**11.2 विशेष सेवाधारी बनने के लिए अमृतवेले के महत्व को समझो :**

सेवाधारियों की विशेषता क्या है? सेवाधारी अर्थात् आँख खुले और सदा बाप के साथ बाप के समान स्थिति का अनुभव करे। अमृतवेले के महत्व को जानने वाले विशेष सेवाधारी की महिमा है — जो विशेष वरदान के समय को जाने और विशेष वरदानों का अनुभव करे। अगर अनुभव नहीं तो साधारण सेवाधारी हुए, विशेष नहीं। विशेष सेवाधारी बनना है तो यह विशेष अधिकार लेकर विशेष बन सकते हो। जिसको अमृतवेले का, संकल्प का, समय का और सेवा का महत्त्व है, ऐसे सर्व महत्व को जानने वाले विशेष सेवाधारी होते हैं। तो इस महत्व को जान महान बनना है। इसी महत्व को जान स्वयं भी महान बनो और औरों को भी महत्व बतला कर, अनुभव करा कर महान बनाओ।

Point to be Noted

यह एक मास ऐसा नेचरल नेचर बनाओ क्योंकि नेचरल नेचर जल्दी में बदलती नहीं है। तो नेचरल नेचर बनाओ जो बताया ना - सदा आपके चेहरे से बाप के गुण दिखाई दें, चलन से बाप की श्रीमत दिखाई दे। सदा मुस्कराता हुआ चेहरा हो। सदा सन्तुष्ट रहने और सन्तुष्ट करने की चाल हो। हर कर्म में, कर्म और योग का बैलेन्स हो। कई बच्चे बापदादा को बहुत अच्छी-अच्छी बातें सुनाते हैं, बतायें क्या कहते हैं? कहते हैं बाबा आप समझ लो ना मेरी यह नेचर है, और कुछ नहीं है, मेरी नेचर ही यह है। अभी बापदादा क्या कहे? मेरी नेचर है? मेरा बोल ऐसा है, कई ऐसे कहते हैं, क्रोध थोड़ेही किया, मेरा बोल थोड़ा बड़ा है, थोड़ा तेज बोला, क्रोध थोड़ेही किया सिर्फ तेज बोला। देखो कितनी मीठी-मीठी बातें हैं। बापदादा कहते हैं जिसको आप मेरी नेचर कहते हो मेरा कहना ही रांग है। मेरी नेचर यह रावण की नेचर है या आपकी नेचर है। आपकी नेचर अनादिकाल आदि काल, पूज्य काल यह ओरीज्नल नेचर है। रावण की चीज़ को मेरा-मेरा कहते हो ना इसीलिए जाती नहीं है। पराई चीज़ को अपना बनाकर रखा है ना, कोई पराई चीज़ को अपने पास सम्भालकर रखे, छिपाकर रखे, अच्छा माना जाता है? तो रावण की नेचर, पराई नेचर उसको मेरा क्यों कहते हो? बड़े फखुर से कहते हैं मेरा दोष नहीं है, मेरी नेचर है। बापदादा को भी रिझाने की कोशिश करते हैं। अभी यह समाप्ति समारोह करेंगे! करेंगे? करेंगे? देखो, दिल से कहो, मन से करो, जहाँ मन होगा ना, वहाँ सब कुछ हो जायेगा। मन से मानो कि यह मेरी नेचर नहीं है। यह दूसरे की चीज़ है, वह नहीं रखनी है। आप तो मरजीवा बन गये ना। आपकी

m.m.m....imp.

Subtle Psychology

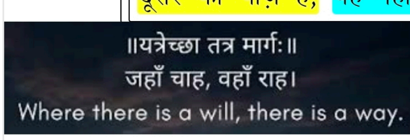






ब्राह्मण नेचर है या पुरानी नेचर है? तो समझा बापदादा क्या चाहते हैं? भले मनोरंजन मनाओ, डांस करो, खेल करो लेकिन... लेकिन है। सब कुछ करते भी समान बनना ही है। समान बनने के बिना साथ चलेंगे कैसे! कस्टम में, धर्मराजपुरी में ठहरना पड़ेगा, साथ नहीं चलेंगे। एक मास अटेन्शन रखेंगे। एक मास अगर अटेन्शन रखा तो नेचरल हो जायेगा। मास का एक दिन भी छोड़ना नहीं। सभी इकट्ठे होके एक दो के प्रति शुभ भावना शुभ कामना का हाथ फैलाओ। जैसे कोई गिरता है ना तो उसको हाथ से प्यार से उठाते हैं तो शुभ भावना और शुभ कामना का हाथ, एक दो को सहयोग देके आगे बढ़ाते चलो। ठीक है? सिर्फ आप चेक कम करते हो, करके पीछे चेक करते हो, हो गया ना! पहले सोचो, पीछे करो। पहले करो पीछे सोचो नहीं। करना ही है।

Here is the Fault

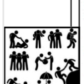

(05.03.2008)